RAMANUJACHARYA

Ramanujacharya occupies a central place in India's spiritual and bhakti tradition. He was born in Sriperumbudur near modern-day Chennai in 1017 A.D. He revitalized Indian philosophy and popular religion. For over a thousand years, he has been the spiritual guide for millions, who have looked upon him as a guide and philosopher. From his life and teachings, waves upon waves of inspirations have flowed, influencing many religious movements under the broad umbrella of the Vaishnava dispensation.

Ramanujacharya was revolutionary who did not shy away in pursuing creative departures from the beaten track for the greater good of mankind. He is credited for having formalized the tenets of the Visistadvaita Vedanta and having laid the foundations for a sound system of philosophy envisioned by his predecessors Nathamuni and Yamunacharya. His 'Sri Bhashya' – an elaborate gloss on Badarayana's Brahma Sutras, has been celebrated by independent observers like George Thibault as accurately reflective of the original author's intentions and is considered a hallmark in exegesis and theological hermeneutics. But what sets him apart, his scholastic contributions notwithstanding, is his transcending caste and social barriers, and professing an all-encompassing attitude to spirituality that is true to the ethos of the Vedic religion. His limitless compassion led to breaking the tradition that expounded the teachings of the scriptures to only one person at a time after examining a student's candidacy. By enjoining seventy four disciples to propagate the dispensation of his faith, Ramanujacharya ensured that the esoteric teachings of the Vedas reached everyone interested in perusing them. He lived his mission by reaching out to tribals and graduating them progressively from their animist faiths to one anchored in the soundness of the Vedas.

Ramanujacharya was cosmopolitan in his views and opened up the portals of temples to all people alike irrespective of caste and creed. A majority of the changes he brought about to temple administration are in vogue even today in the temple of Srirangam, Tiruchirapalli, where the downtrodden class render uninterrupted service to Lord Ranganatha round the year. The Srivaishnavite hagiographical accounts are replete with incidents related to how Ramanujacharya professed and practised a liberal attitude towards people who were marginalized in the name of caste. Pillai Urangavilli Dasa, one of Ramanuja's principal disciples, and a member of a marginalized caste, was held in such high esteem by Ramanujacharya. He placed the devotees of the Lord on a supreme pedestal to those well-versed in the Vedas, opining that physical birth into a class should not come in the way of serving the true devotees of the Lord.

Ramanujacharya espoused that service to humanity, and not birth into a higher caste, elevates one to the spiritual abode of perennial happiness. His devotion to the feet of Parankusa, a poet-saint belonging to a backward caste, was so immense that it fetched him the name 'Parankusa-pada-bhakta' – one who is devoted to the feet of Parankusa. The fact that Ramanujacharya drew extensively from the compositions of Parankusa's Tiruvaimoli to support his theological conclusions is evidence that he was inclined to learning from everyone, cutting across all impositions and socially-drawn boundaries. Ramanuja's social engineering assumes special significance considering the cultural milieu and political climate under which he rung in these changes. He stood firm in his resolve to fulfil his mission despite his life being put under threat by those offended by his methods.

According to scholar-philosophers, Ramanujacharya's appearance in this world is akin to the rising sun, to dispel the darkness of ignorance and to make the lotus of knowledge, virtue and righteousness bloom in this world. The same is evident from the following verse in Sanskrit:

पुण्याम्भोजविकासाय पापध्वान्तक्षयाय च।
श्रीमानाविरभूभ्दूमौ रामानुजदिवाकरः।।

Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on Ramanujacharya on the occasion of his 1000th birth anniversary.

Credits:-

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp/FDC/Brochure Cancellation Cachet	:	Sh. Subir Das

भारत डाक विभाग

DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

विवरणिका
BROCHURE

RAMANUJACHARYA रामानुजाचार्य

MILLENNIUM : 1017 - 2017 CE मिलेनियम:१०१७ - २०१७ सीई



रामानुजाचार्य

भारत की आध्यात्मिक और भक्ति परंपरा में रामानुजाचार्य का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका जन्म आधुनिक समय के चेन्नई के निकट श्रीपेरूम्बुदुर में सन् 1017 ईसवी में हुआ था। उन्होंने भारतीय दर्शन और लोकप्रिय धर्म का पुनरूद्धार किया। वे, हजार वर्ष से अधिक समय के लिए उन लाखों लोगों के आध्यात्मिक मार्गदर्शक रहे, जो उन्हें अपना पथ-प्रदर्शक मानते थे। उनके जीवन और शिक्षाओं से प्रवाहित प्रेरणाओं की अनवरत तरंगों ने वैष्णव सम्प्रदाय की छत्रछाया के अंतर्गत कई धार्मिक आंदोलनों को प्रभावित किया।

रामानुजाचार्य एक ऐसे क्रांतिकारी थे, जिन्होंने मानव-जाति के वृहत्तर कल्याण के लिए नवीन रचनात्मक अनुष्ठानों को अपनाने में जरा भी संकोच नहीं किया। उन्हें विशिष्टाद्वैत वेदांत के सिद्धांतों को औपचारिक रूप देने तथा दर्शन की एक एक ऐसी दृढ़ प्रणाली की नींव रखने का श्रेय दिया जाता है जिसकी संकल्पना उनके पूर्ववती गुरु नाथमुनि और यमुनाचार्य ने की थी। उनकी कृति 'श्री भाष्य' में बदरायण के ब्रह्म सूत्र की विस्तृत व्याख्या की गई है और इस रचना को जॉर्ज थिबॉल्ट जैसे स्वतंत्र समीक्षक द्वारा सराहा गया है। जॉर्ज थिबॉल्ट ने इसे, मूल लेखक के आशयों का प्रतिबिम्ब कहा है, जो टीका और ईश्वरपरक व्याख्याओं का प्रमाणांक है। रामानुजाचार्य के शैक्षिक योगदान के अलावा, जो बात उन्हें सबसे पृथक करती है वह जातिगत और सामाजिक अवरोधों से ऊपर उठकर आध्यात्मिकता के प्रति उनका सर्व-समावेशी दृष्टिकोण है, जो वैदिक धर्म की वास्तविक प्रकृति है। अपनी असीमित संवेदनशीलता के कारण वे उस परंपरा को तोड़ने में सफल हो सके, जिसके अंतर्गत किसी शिष्य की उम्मीदवारी की जांच करने के पश्चात्, एक समय में केवल एक ही व्यक्ति के लिए धर्मग्रंथों की शिक्षाओं की व्याख्या की जाती थी। रामानुजाचार्य ने अपनी विचारधारा के प्रचार और प्रसार के लिए चौहत्तर अनुयायियों को आदेश देकर यह सुनिश्चित किया कि वेदों की गूढ शिक्षाएं, वेदों का अध्ययन करने के इच्छुक लोगों तक पहुंच सकें। अपने ध्येय की पूर्ति हेतु रामानुजाचार्य ने आदिवासियों को उनकी जीवात्मवाद की विचारधारा से बाहर निकाल कर उन्हें वैदिक विचारधारा से अवगत कराया।

रामानुजाचार्य सार्वभौमिक विचारधारा में विश्वास करते थे और उन्होंने सभी जातियों और धर्मों के लोगों के लिए समान रूप से मंदिरों में प्रवेश की अनुमति दी। मंदिर प्रशासन के संबंध में उनके द्वारा लाए गए अधिकांश परिवर्तन आज भी श्रीरंगम मंदिर, तिरूचिरापल्ली में प्रचलन में हैं। इस मंदिर में पददलित वर्ग के लोग, वर्ष भर भगवान रंगनाथ की अविरत सेवा करते हैं। श्री वैष्णव सम्प्रदाय के संत चरित लेख ऐसे वृत्तांतों के परिपूर्ण हैं, जिनमें यह दर्शाया गया कि रामानुजाचार्य किस प्रकार जाति के नाम पर उपेक्षित व्यक्तियों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखते थे। पिल्लै उरंगाविल्ली दास, जो रामानुजाचार्य के प्रधान शिष्यों में से एक थे और उपेक्षित जाति के सदस्य भी थे, को रामानुजाचार्य द्वारा आदर दिया गया था। उन्होंने भगवान के भक्तों को, वेदों में प्रवीण व्यक्तियों से श्रेष्ठ पीठिका पर रखा था। उनका यह मत था कि किसी जाति में जन्म लेना, भगवान के सच्चे भक्तों की राह में आड़े नहीं आना चाहिए।

रामानुजाचार्य इस बात के प्रबल समर्थक थे कि उच्च जाति में जन्म लेने से नहीं अपितु मानवता की सेवा, इंसान को चिरस्थायी प्रसन्नता के आध्यात्मिक धाम की ओर ले जाती है। परणकुश नाम के पिछड़ी जाति के कवि-संत के चरणों की अपार भक्ति करने के कारण रामानुजाचार्य को 'परणकुश-पाद-भक्त' नाम दिया गया जिसका अर्थ ऐसे व्यक्ति से है, जो परणकुश के चरणों का भक्त है। रामानुजाचार्य ने अपने धर्मशास्त्रीय निष्कर्षों के समर्थन में परणकुश की रचना 'तिरूवाईमोली' का व्यापक सहारा लिया। यह इस बात का द्योतक है कि सभी प्रकार की थोपी गई प्रथाओं और सामाजिक बंधनों की परवाह न करते हुए रामानुजाचार्य ने सभी से सीख लेने की चेष्टा की। जिस प्रकार के सांस्कृतिक परिवेश और राजनैतिक परिस्थितियों के अंतर्गत रामानुजाचार्य द्वारा ऐसे परिवर्तन लाए गए थे, उन पर विचार करते हुए रामानुजाचार्य की सामाजिक दृष्टि का महत्व और बढ़ जाता है। रामानुजाचार्य की कार्य-प्रणालियों से आहत व्यक्तियों द्वारा उनके जीवन को खतरा होने के बावजूद, वे अपने उद्देश्य की पूर्ति के प्रति कृतसंकल्प रहे।

विद्वानों-दार्शनिकों के अनुसार, इस जगत में रामानुजाचार्य का आविर्भाव उदय होते हुए सूर्य के समान है, जो अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने के साथ-साथ ज्ञान, नैतिकता और सदाचार का प्रसार करता है। यह संस्कृत के निम्नलिखित श्लोक से भी स्पष्ट होता है:

पुण्याम्भोजविकासाय पापध्वान्तक्षयाय च।
श्रीमानाविरभूभ्दूमौ रामानुजदिवाकरः।।

डाक विभाग रामानुजाचार्य की 1000वीं जयंती के अवसर पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः-

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण	:	श्री सुबीर दास

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	2500 पैसा
Denomination	:	2500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	301590
Stamps Printed	:	301590
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00